I J R S S I S, Issue (IX), Vol. (I), May 2023: 130-132
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 517X
Original Article

Reg. No. : MH-NGP/0000167

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES

© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

हिन्दी के समकालीन उपन्यासों में महानगरीय और मध्यमवर्गीय जीवन : (मेहरून्निसा परवेज के कथाओ के विशेष संदर्भ में)

मोमना खातून शब्बीर अहमद
हिंदी भाषा अनुसंधान विभाग महात्मा गांधी मिशन विश्वविद्यालय औरंगाबाद

Communicated : 18.01.2023 | Revision : 25.02.2023 Accepted : 25.03.2023 | Published : 30.05.2023

सारांश : *मेहरून्निसा परवेज का लेखन विशेष रूपसे भारतीय नारी के परिवेश के ईद–गिर्द घुमती है यहाँ नारी के भीतर उत्पन्न व्दंव्द को दिखाया है । महानगरीय जीवन मे लोगो के बीच मनमुटाव अलगावका रूप ले लेताहै । और मध्यमवर्गीय जीवन मे मनमुटाव, तनाव, घुटनका रूप ले लेता है, तथा अपने रिश्तो को न चाहते हुए भी झेलना पडता है। पर आज की नारी स्वंय शिक्षित, स्वलंबित है वह अपने अधिकारों और अपने कर्तव्यो का निर्वाह स्वंय करती है। उन सब परिस्थितीयोंसे निपटते हुए जीवन–यापन करती है।*

मुख्यशब्द :*महानगरीय जीवन, माध्यम वर्गीय जीवन, स्वांवलंबी जीवन यापन*

प्रस्तावना :

भारतीय समाज में आज भी पुरूष प्रधान व्यवस्था है। पुरूष वर्ग आज भी अपने परिवार पर अधिकार जमाने की कोशिश कतरा है वह अपनी पत्नी,बेटी तथा बहु को अपने काबू में रखने की कोशिश करता है वैसे स्त्री शादी से पूर्व एंव शादी के बाद का जीवन दुखमयी होता है इसमें कोई संदेह नहीं है आधुनिक काल तक पुरूष नारी को खिलौना समझने लगा है नारी चाहें कितना भी प्रयत्न क्यों न करे परंतु पुरूष का अहंकार उसे दबाकर रखता है इसलिए शादी के बाद भी उनके दांपत्य संबंध बिगडने लगते हैं आज स्त्री पुरूष उसे अपना अपमान समझता है जिससे दांपत्य जीवन में कलह और मन मुटाव शुरू हो जाता है अंहकार अनैतिकता विचारों में भिन्नता यौन अतृप्ति संतान हिंता संशय, अविश्वास आदि अनेक करण है जो इस सुंदर रिश्ते की नींव को हिला रहे है आज़ादी के बाद की आधुनिकीकरण की होड़ मे जो नई सामाजिक व्यवस्था जन्मलिया था उसमे परिवार का दायरा सिकुडा हुआ दिखाई पडता है इसके कारण है जिसको दंपति जीवन में कल और मनमुताव शुरू हो जाता है पति–पत्नी संबंध स्त्री–पुरूष संबंध मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण संबंध है परिवार के मूल सदस्य पति पत्नी ही है हमारे यहां इनका संबंध जन्म–जन्मांतर का माना जाता है पति पत्नी के बीच रागात्मकता का रिश्ता पारिवारीक सुख के लिए ही नहीं सफल समृध्द सभ्य परिवार रूपी गाडी में पति–पत्नी का स्थान पाहियों के समान है जिस प्रकार पहियों पर सभी चीजों का बोझ होता है उसी प्रकार अपने कर्तव्य और दायित्व का पालन करते है लेकिन अगर पाहिया कमजोर हो तो गाडी जल्दी टूट जाती है उसी प्रकार परिवार मे पति पत्नी के संबंध मे दुरियॉ आ जाती है ना ही वो प्रसन्न रह पाते हैं नही फल–मूल पाते है।

आधुनिक काल में अनेक परिवर्तन के कारण सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन हुए इसी के अंतर्गत विवाह का स्वरूप भी बदलता चला गया संबंधों में सब से अधिक समस्या दाम्पत्य संबंधों में देखने को मिल रही है इसलिए वह एक दुसरे को समय नहीं दे पा रहे वे कहीं और प्रेम तलाशते नजर आते हैं जिससे अनेक समस्याॅए उत्पन्न हो

रही है संयुक्त परिवार में संबंधो मंआए बिखराव के कारण दाम्पत्य संबंधो में तनाव निर्माण हुए है आज की स्थिती मे पति–पत्नी का आदर्शवादी संबंध लुप्त हो रहा है शिक्षा प्राप्त कर स्त्री महत्वाकांक्षी हो गई है वह अपने अधिकारों, कर्तव्य भावना को तर्क की कसौटी पर परखना चाहति है वह पति का आज्ञा को ऑख बंद करके विश्वास नही करती बल्की हर एक बात पर तर्क–वितर्क करती है और इसकी वजह से दोनो में वाद–विवाद होता नजर आता है इस बार मे डॉ.सुरेश सिन्हा कहते हैं –नारियां हमारे वास्तविक जीवन में भी पुरूष की पूर्णता सिध्द कर जीवन को पूर्ण बनाती है

मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में जीवन के अनुभवों को रूपायित किया है उन्होने अपने भोगे हुए यथार्थ का चित्रण लेखन दवारा कराया है मध्यम वर्ग सामाजिक मूल्यों के मानदण्ड नीती–नियम आदि स्त्री और पुरूष के लिए भिन्न–भिन्न रखे हैं मध्यम वर्ग की मान्यताके अनुसार सारे प्रतिबन्ध स्त्री पर ही लगाये गए हैं पर आज की स्त्री शिक्षीत और स्वालंबित है अपने उपर लगाए सारे प्रतिबंधो को तोड अपने हकअधिकार के लिए डटकर सामना कर रही है अपनी आवाज को सभी तक पहुंचा रही है अपने सम्मान की रक्षा तथा अपने साथी चुनने का सामना कर अपने परिवार का पालनपोषण करने में समक्ष है

आंखों की देहलीज –

उपन्यास में दाम्पत्य जीवन में आई दरार के कारण द्वद्व एंव रागदृष का माध्यम तालिया को दिखाया है तालिया शादी के बाद भी मॉ नही बन सकी पति शमीम से बार–बार मॉ बनने की इच्छा दोहरेने से शमीम उस पर क्रोधित हो जाता है बहुत समझाने पर भी तालिया में मॉ बनने की तीव्र इच्छा जागती रहती है इसी इच्छा की आशा की तालिया का शारिरीक संबंध जावेद से बन जाता है संबंध बनाने के बाद तलिया को एहसास होता है कि उसने गलत किया पति शमीम उसे बहुत चाहता है तालिया इस परेशानी में उलझी रहती है और अपनि मित्र जमिला से अपने द्वंद्व को व्यक्त करते हुए कहते हैं मेरी ऑखों की खिडकी से कोई भी झांक कर मेरी जिंदगी की मजार देख सकता है मै क्या करू तालिया में पति के प्रति समाप्रित भावना हीं है वह पर पुरूष के प्रति आकर्षित हो जाति हैं वह भीतर ही खुद को कोसती और दोषी मानकर जीवन खत्म करने की कोशिश करती है और नाकाम होती है इसी ग्लानी के कारण पति का घर छोड अपने को घुम कर लेती है

उसका घर

उपन्यास में संबंधो के सामाजिक रूप को न अपना कर आधुनिक रूप की परिकल्पना की है रिश्तों में टकराहट आने से उन्हें जीवन भर लगने से अच्छा है उन संबंधों से अलग हो जाना एल्मा अपने हिन्दु प्रेमी से अलग हो अपना जीवन यापन करती है एल्मा का मानना है कि यह तो दिल के संबंध होते हैं पत्नी को भीख में मांगा हुआ अधिकार कभी सुख नहीं देता जब उनके मन से ही उतर गई वोह ठातवह अधिकार प्राप्त नही होगा रही अदालत जाने की बात तो पति–पत्नी में यदि दरार पड ही जाए तो दुनिया की कोई अदालत उसे नही जोड सकती संबंधों में आई दूरी से रिश्ते दोबारा नहीं बनते परिवार एंव समाज जितना भी प्रयास करले

एल्मा परिवार के सुख के लिए अपनी बलि देने से भी नही घबरातील एल्मा अपना पिडा किसी से नहीं कहती एल्मा अपनी इष्ट को याद कर उनकी सहन शक्ती को देख याद कर अपनी समस्याओं को तुच्छ समझती है एल्मा के पति के साथ–साथ उसका भाई भी उसे दर्द पहुचाने से बाज़ नही आता उसका शोषण कर वेदना और संत्रणा देने से नही चुकता जहां एक और एल्मा की बेबसी

और घुटन को दिखाया है वही दूसरी और रेशमा समस्याओं से लड समाज एंव परिवार का विरोध कर अपने प्रेम का रूप व्यक्त करती है नायिका रेशमा अपने प्रेमी से अंतर्जातीय विवाह कर अपनी मॉ की हिंसा का शिकार बनती है विवाह से दुखी मॉ उसे कोस्ती और अपना रोष प्रकट करती है किसी भी चार चमार से बच्चा जन्मकार वह आजाए तो क्या मैं उसे मानलू कभी नही रेशमा अपने प्यार के लिए माँ का विरोध करने से नही हिचकिचाती जातीगत भेदभाव के पक्ष में अपना विचार करती है

निष्कर्ष –

अंत में हम यह कह सकते है कि मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में आधुनिक युग में प्रेम पवित्रता और कर्तव्य अधिकारों के मूल्य मे परिवर्तन हुआ है वही अपना दायित्व निभाना यह रिश्तों के लिए बहुत जरूरी है लेखिका ने अपने उपन्यासों में दाम्पत्य समस्या को दिखाया है आँखों की दहलीज मे पत्नी ने अपने को दोषी मानने के कारण एंव हताश हो जीवन को समाप्त करने में लगी हुई है उसका घर उपन्यास मे पति–पत्नी में अविश्वास ने परिवार को तोड दिया केवल समझौता के आधार पर जीवन जी रहे है रिश्तों में आयी निरशता से जीवन कठिनाइयों से भर जाता है कही स्त्री अपने प्रेम अपने रिश्तों को बनाने के लिए समाज से टकरा जाती है उसका घर में इन्ही मुल्यों में गिरावट को लेखिका ने दिखाने का प्रयास किया हैं नारी के मन में जहाँ प्रेम पवित्रता और करूणा आदि मूल्यों में बदलाव नहीं था वही अब क्रौध अपवित्रता आक्रोश एंव द्वदंव ने ले लिया हैं.

संदर्भ:

मार्डन टेण्डस इन मेरिटल रिलेशन्स ज्योति बेराँट पृ ६५
संपादत योगेन्द्र दत्त शर्मा आज कल पत्रिका का मार्च २००७ पृ १९
बलराज मानव–मूल्य और स्वातंत्र्योतर हिन्दी उपन्यास पृ ४७
मेहरून्निसा परवेज–आँखों की दहलिज पृ १०८
वही पृ. ९८
वही पृ. १००
मेहरून्निसा परवेज उसका घर पृ. ५
वही पृ. ८१
वही पृ. ८२